"चना उत्पादन तकनीक"

भूमि का चयन एवं खेत की तैयारी :–

- चना के भरपुर उत्पादन के लिए मध्यम से भारी दोमट भूमि सबसे अधिक उपयुक्त होती है।
- भूमि का पी.एच. मान 6.5 से 8.00 के मध्य होना चाहिए।
- सिंचित क्षेत्र में खरीफ फसलों की कटाई के तुरंत बाद 1 से 2 बार कल्टीवेटर द्वारा आड़ी खड़ी जमीन की जुताई करे। उसके एक सप्ताह बाद पलेवा देकर बतर आने पर कल्टीवेटर द्वारा 1–2 बार जुताई करके पाटा चलाकर खेत की मिट्टी को भुरभुरा बनाये।

उन्नत किस्में :–

- **देशी चना** :– जे.जी.–11, जाकी–9218, जे.जी.–16 एवं जे.जी. –130, जे.जी.–6, जे.जी.–74, जे.जी.–412, जे.जी.–226, जे.जी.–322, जे.जी.–315, जे.जी.–130, जे.जी.–63 एवं जे.जी.–14
- **काबुली** :– काक–2, जे.जी.के.–2, जे.जी.के.–19,जे.जी.के–1, जे.जी.के.–3
- **गुलाबी चना** :– जे.जी.जी.–1

बोने का समय :–

- बुआई का उचित समय 20 अक्टूबर से 10 नवंबर है।

बीज दर :–

- बुआई हेतु 70 से 75 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर प्रयोग करे।
- बड़े दानो की किस्मों हेतु 80 से 85 कि.ग्रा बीज की बुआई करे।
- काबुली चने हेतु 100 से 120 कि.ग्रा. बीज की बुआई करें।

बीजोपचार :–

- उकठा एवं जड़ गलन रोग से फसल के बचाव हेतु बोने से पहले बीज को 2 ग्राम थायरम तथा 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम के मिश्रण से प्रति कि.ग्रा. बीज को उपचारित करना चाहिए।
- ट्राइकोडर्मा विरडी + वीटावेक्स (4:1) ग्राम से प्रति कि.ग्रा. बीज को उपचारित करें।
- दीमक के नियंत्रण हेतु क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. 4 मि.ली. प्रति लीटर से प्रति किलो ग्राम बीज को उपचारित करें।

- 10 ग्राम राइजोबियम कल्चर + 10 ग्राम पी.एस.बी. प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें।
- 1 ग्राम अमोनियम मॉलिब्डेट प्रति किलो ग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

बुआई की विधि :–

- बुआई देशी हल के पीछे लगे पोरे से कूड़ो में करनी चाहिए ।
- सीड ड्रिल से भी बुआई की जा सकती है ।
- चौड़ी मेड़–नाली बनाकर कतार में बुआई करें जिसमें ड्रिप द्वारा सिंचाई देवे। ऐसा करने से उत्पादन अधिक मिलता है।
- पंक्तियों से पंक्तियों की दूरी 30 से 40 से.मी. तथा पौधों के मध्य दूरी 5 से 10 से.मी. रखी जाती है।
- असिंचित एवं पछेती बुआई की दशा में कूड़ से कूड़ की दूरी 30 से.मी. रखें।
- सिंचित अवस्था में काबुली चने में कूड़ों के बीच की दूरी 40 से.मी. रखनी चाहिए।
- 10 से.मी. से अधिक गहराई पर बीज नही बोना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन :–

- सिंचित अवस्था हेतु नत्रजन 20 किग्रा एवं स्फुर 60 कि.ग्रा. तथा पोटाश 20 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से आधारीय उर्वरक के रुप में दे।
- असिंचित क्षेत्रो में नत्रजन 20 किग्रा एवं स्फुर 40 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर बोनी के समय दे।
- भूमि में जस्ते की कमी होने पर 25 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट/हेक्टेयर का प्रयोग चार फसल बाद दोहरायें।

सिंचाई प्रबंधन :–

- सिंचित क्षेत्रों में सिंचाई बुआई के 45 से 60 दिन बाद अधिकतम शाखाएं आने पर दें।
- हल्की भूमि में पहली सिंचाई शाखाएँ आने पर तथा दूसरी सिंचाई फली एवं दाना बनते समय दे।
- सामान्यतः भूमि में एक ही सिंचाई करना चाहिए।
- फूल आते समय सिंचाई कदापि न करें।

खरपतवार नियंत्रण :–

- बुआई के 30 से 35 दिन बाद पहली निंदाई–गुड़ाई कर खरपतवार नियंत्रण करना चाहिए तथा दूसरी निंदाई–गुड़ाई 60 से 70 दिन बाद करनी चाहिए।
- पेंडीमेथालीन 38.7 प्रतिशत (स्टाम्प एक्सट्रा) 1750 मि.ली. प्रति हेक्टेयर की दर से 500–600 ली. पानी में घोल तैयार कर बुवाई के 1 से 2 दिन के अंदर छिड़काव करने से मौसमी खरपतवार नष्ट हो जाते है या फिर उगने के बाद मर जाते है।

कीट नियंत्रण :–

- सेक्स फेरोमोन ट्रेप एवं प्रकाश प्रपंच का प्रयोग कीट का प्रकोप बढ़ने से पहले चेतावनी के रुप में करते है।
- टी (T) आकार की खूंटी 40 से 50 प्रति हेक्टेयर कीटभक्षी चिड़ियों के बैठने हेतु करे।
- चना फली भेदक चने की फसल पर लगने वाले कीटों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।
- न्यूक्लियर पालीहाइड्रोसिस वायरस (एन.पी.वी.) का 250 लार्वा तुल्य प्रति हेक्टेयर 3 बार छिड़काव करें।
- जीवाणु बैसीलस थ्योरिनजेनसिस (बायोलेप, डिपेल) 1 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर के हिसाब से छिड़काव करें।
- इन्डोक्साकार्ब 14.5 एस.सी. 500 मि.ली. प्रति हेक्टेयर अथवा इमामेक्टीन बेंजोएट 5 प्रतिशत एस.जी. 200 ग्राम प्रति हेक्टेयर 500 से 600 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

रोग नियंत्रण :–

- **उकठा (फ्यूजेरियम विल्ट)** – वीटावेक्स 1 ग्राम को 4 ग्राम ट्राइकोडर्मा फफूँदी के साथ मिलाकर प्रति कि.ग्रा. बीज का उपचार करना चाहिए।
- **रोगरोधी प्रजातियॉ** जैसे–जे.जी.–63, जे.जी.–11 एवं काक–2 (काबुली)।
- **स्तंभ मूल संधि विगलन (कालर रॉट)** – दीर्घकालिक (तीन चार वर्ष) फसल चक्र अपनाना चाहिए।
- बुआई से पहले बीज उपचार वीटावेक्स कवकनाशी और ट्राइकोडर्मा (1:4) के अनुपात में मिलाकर प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचार करें।

उपज :–

- चना की उन्नत किस्मों से लगभग 20 से 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती है।